हौसला और सम्मान दें,
बच्चों के सपनों को उड़ान दें।

समुदाय के लिए बाल विवाह के बारे में फ्लिप बुक

बाल विवाह एक प्रमुख सामाजिक मुद्दा और बच्चों के अधिकारों का उल्लंघन है – चाहे यह लड़के के साथ हो या लड़की के साथ– क्योंकि यह स्वास्थ्य, पोषण, विकास, शिक्षा और व्यवहार पर गलत प्रभाव डालता है और साथ ही बच्चे को उसके बचपन से वंचित करता है।

राजस्थान उन राज्यों में से एक है, जिसमें बाल विवाह की घटनाएं सबसे अधिक हैं। बाल विवाह का बच्चों, उनके परिवार और समाज पर बहुत बुरा असर पड़ता है। बाल विवाह से लड़कों और लड़कियों दोनों को शिक्षा के साथ शारीरिक और मानसिक विकास के अवसर नहीं मिल पाते हैं। विशेष रूप से लड़कियों पर इसके गंभीर परिणाम दिखाई देते हैं, क्योंकि वे शादी के बाद गृहस्थी में फंसकर जल्दी बच्चे पैदा करने और सामाजिक रूप से अलग–थलग पड़ने के लिये मजबूर हो जाती हैं।

अपने बच्चों, खासकर लड़कियों की जल्दी शादी करने से हम उन्हें स्कूल से दूर ले जाते हैं, उनके अवसरों को सीमित कर देते हैं और उन पर छोटी उम्र में ही पूरे घर को सम्भालने की जिम्मेदारी डाल देते हैं। समाज के विकास पर भी इसका नकारात्मक असर पड़ता है। हमें प्रतिज्ञा लेनी चाहिए कि हम अपने बच्चों को स्कूल भेजेंगे। उनकी शिक्षा पूरी करेंगे, उनका कौशल्य वर्धन करेंगे। अपना जीवन सही प्रकार से जी सकें, इसके लिए सक्षम बनाएंगे और उनकी शादी तभी करेंगे जब वे शादी के लिए शारीरिक और मानसिक रूप से तैयार हो जाऐंगे।

इस फ्लिप बुक का एक कहानी के रूप में माता–पिता, अभिभावक और समुदाय के सदस्यों के साथ आपसी बातचीत के लिए उपयोग किया जा सकता है। यह कुछ जरूरी विषयों के बारे में जानकारी देती है, जैसे कि शादी करने की कानूनी उम्र, बाल विवाह के कुप्रभाव और हर बच्चे को पढ़ने का तथा स्वस्थ जीवन जीने का महत्व।

फ्लिप बुक प्रयोग करने के लिए मार्गदर्शिका

प्रिय फेसिलिटेटर,

इस फ्लिप बुक का प्रयोग आप समुदाय के सदस्यों के साथ आपसी बातचीत को रुचिकर तथा प्रभावशाली बनाने के लिए कर सकते हैं। यह दर्शकों को बाल विवाह के विषय पर सवाल पूछने के लिए प्रोत्साहित करती है, उनके संदेहों को दूर करती है और उनके ज्ञान को बढ़ाती है। इसे आप आसानी से अपने बैग में रख कर कहीं भी ले जा सकते हैं।

यह फ्लिप बुक छोटे समूह (7 से 8 लोगों) के बीच में प्रयोग की जा सकती है। इसके एक तरफ चित्र हैं जो समुदाय को दिखाए जाएंगे और दूसरी तरफ कहानी लिखी है, जो आप पढ़कर उनको बताएंगे।

इस फ्लिप बुक का प्रयोग करने के लिए निम्नलिखित बातों का ध्यान रखें:

- महत्वपूर्ण संदेश पर जोर दें
- ज्ञान को बढ़ाएं
- संदेशों को फिर से दोहराएं
- दर्शकों का ध्यान और भागीदारी बढ़ाएं
- एक सही समय की योजना बनाएं
- समूह 7 या 8 लोगों से ज्यादा का न हो
- कमरे में, या अन्य किसी और स्थान पर, जहां भी आप इसका प्रयोग कर रहे हैं, सभी लोगों के बैठने की भरपूर जगह हो।

इस फ्लिप बुक का प्रयोग कैसे करें:

- समुदाय को एक आधे गोल घेरे (सेमी–सर्कल) में बैठाएं और स्वयं भी उनके साथ बैठ जाएं।
- फ्लिप बुक का प्रयोग करने से पहले आपको उनसे थोड़ी बातचीत शुरू करनी चाहिए, जैसे कि उनका हालचाल पूछना।
- सही समय पर, आप अपने बैग से फ्लिप बुक को निकालें।
- फ्लिप बुक को हाथ में इस तरह से पकड़ें, ताकि प्रत्येक प्रतिभागी चित्रों को आसानी से देख सकें।
- चित्र दिखाते समय या पेज पलटते समय, आपका हाथ किसी भी चित्र के सामने नहीं आना चाहिए।
- फ्लिप बुक को इस प्रकार पकड़ें कि चित्र दर्शकों के तरफ हो और संदेश/कहानी आपकी तरफ हो। ऐसा न लगे कि आप सिर्फ संदेश/कहानी पढ़कर बोल रहे हैं, उन्हें थोड़ी बातचीत की भाषा में समझाएं। ऐसा लगना चाहिए कि आप चित्रों की सहायता से कोई कहानी सुना रहे हों।
- हर पन्ने के लिए कोई निर्धारित समय नहीं है, लेकिन आपको सारे संदेशों को ध्यान में रखते हुए अपने समय का प्रयोग करना चाहिए।
- आपको महत्वपूर्ण सवाल पूछ कर, समूह को चर्चा में भाग लेने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए जैसे कि आपको यहां क्या दिख रहा है? इस चित्र में क्या हो रहा है आदि। हर पन्ने में 'चर्चा के बिन्दु' और 'मुख्य संदेश' दिए गए हैं, जो चर्चा को आगे बढ़ाने में आपकी मदद करेंगे।
- कहानी के बाद मुख्य संदेश को फिर से दोहरायें।
- जब फ्लिप बुक का प्रयोग खत्म हो जाए, तो आप सभी को धन्यवाद देते हुए बातचीत को समाप्त करें।

अनीता और लोकेश स्कूल से खुशी–खुशी आकर, अपने माता–पिता, धनराज और सुमित्रा से बात करते हुए...

सुमित्रा : अरे अनीता और लोकेश, तुम दोनों स्कूल से इतनी जल्दी आ गए?

अनीता : हां मां, मेरा और लोकेश भैया का आज अर्द्ध वार्षिक परीक्षा का रिजल्ट आया है।

धनराज : अच्छा! जरा हम भी तो देखें तुम्हारा रिजल्ट।

अनीता : बाबू जी, हम दोनों पास हो गए हैं।

धनराज : अरे वाह, ये तो बड़ी खुशी की बात है।

सुमित्रा : बस अब तो अनीता कुछ ही महीनों में 9वीं कक्षा में चली जाएगी। इसका दाखिला किस स्कूल में कराया जाये, समझ में नहीं आ रहा है।

चर्चा के बिन्दु

- सुमित्रा और धनराज को बच्चों की पढ़ाई के लिए कौन–से कदम उठाने चाहिए?
- आपके घर में बच्चों की पढ़ाई के बारे में कौन निर्णय लेता है?

मुख्य संदेश

- लड़का हो या लड़की, दोनों को समान रूप से शिक्षा के अवसर मिलने चाहिए।
- बच्चों के विकास में, माता–पिता दोनों की भागीदारी आवश्यक है।

धनराज अपने घर पर सुमित्रा से बैठकर बात करते हुए...

सुमित्रा : आज आप सुबह से इतने चुपचाप क्यों बैठे हो?

धनराज : कुछ नहीं, बस अनीता के स्कूल दाखिले के बारे में सोच रहा हूं।

सुमित्रा : हां जी, हमारे गांव में तो कोई स्कूल ही नहीं, जहां हम अनीता को भेज सकें। स्कूल है भी तो, गांव से काफी दूर।

धनराज : इसी बात की तो चिंता है सुमित्रा, अनीता को इतनी दूर पढ़ाई के लिए भेजना क्या ठीक होगा?

सुमित्रा : क्या करें! इसी वजह से तो गांव के बहुत सारे बच्चे अपनी पढ़ाई पूरी नहीं कर पाते। वे भी यही सोचते हैं कि कौन भेजे अपने बच्चों को इतनी दूर पढ़ने के लिए।

धनराज : सही कहा तुमने, पर मैं अपनी अनीता की पढ़ाई को रोकना नहीं चाहता, क्योंकि–

- वह पढ़ेगी–लिखेगी तभी तो उसकी समझ बढ़ेगी।
- अपने पैरों पर खड़ी हो सकेगी।
- अपने बच्चों और परिवार के प्रति अपनी जिम्मेदारी समझ सकेगी।
- समाज में अच्छे नागरिक के रुप में अपनी भूमिका अदा कर पाएगी।

सुमित्रा : ठीक कहा आपने, मैं भी तो यही चाहती हूं। चलो देखते हैं, कोई न कोई रास्ता जरुर निकलेगा।

चर्चा के बिन्दु

- पढ़ाई में बाधाओं को कम करने के लिए सुमित्रा और धनराज ने जो चर्चा की, उसके बारे में आप क्या सोचते हैं?
- रोजगार पाने के अलावा पढ़ाई करने के और कौन से फायदे होते हैं?

मुख्य संदेश

परिवार और समाज को, लड़की और लड़के दोनों की पढ़ाई को जारी रखने की पूरी कोशिश करनी चाहिए।

लोकेश और अनीता स्कूल जाते हुए...

लोकेश और अनीता : अच्छा मां–बाबू जी, हम जा रहे हैं स्कूल।

सुमित्रा : अरे रुको तो, आज तुम्हारे बाबू जी भी तुम लोगों के साथ जा रहे हैं, तुम लोगों की खेल प्रतियोगिता देखने।

लोकेश : अरे वाह! बाबू जी जल्दी चलिए हमें देर हो रही है।

धनराज : अच्छा सुमित्रा, मैं चलता हूं, स्कूल में इनकी खेल प्रतियोगिता देख, उधर से ही काम पर चला जाऊंगा।

सुमित्रा : ठीक है जी। अच्छा अनीता और लोकेश, तुम दोनों खेल प्रतियोगिता जीतने की पूरी कोशिश करना।

लोकेश और अनीता : जरुर मां, जरुर।

चर्चा के बिन्दु

लड़कियों और लड़कों के शारीरिक और मानसिक विकास के लिए पढ़ाई के अलावा और क्या जरूरी होता है?

मुख्य संदेश

लड़कियों और लड़कों के विकास के लिए शिक्षा के साथ–साथ अन्य गतिविधियों जैसे कि खेलकूद, कला, सामुदायिक मामलों आदि में भाग लेना भी जरूरी होता है।

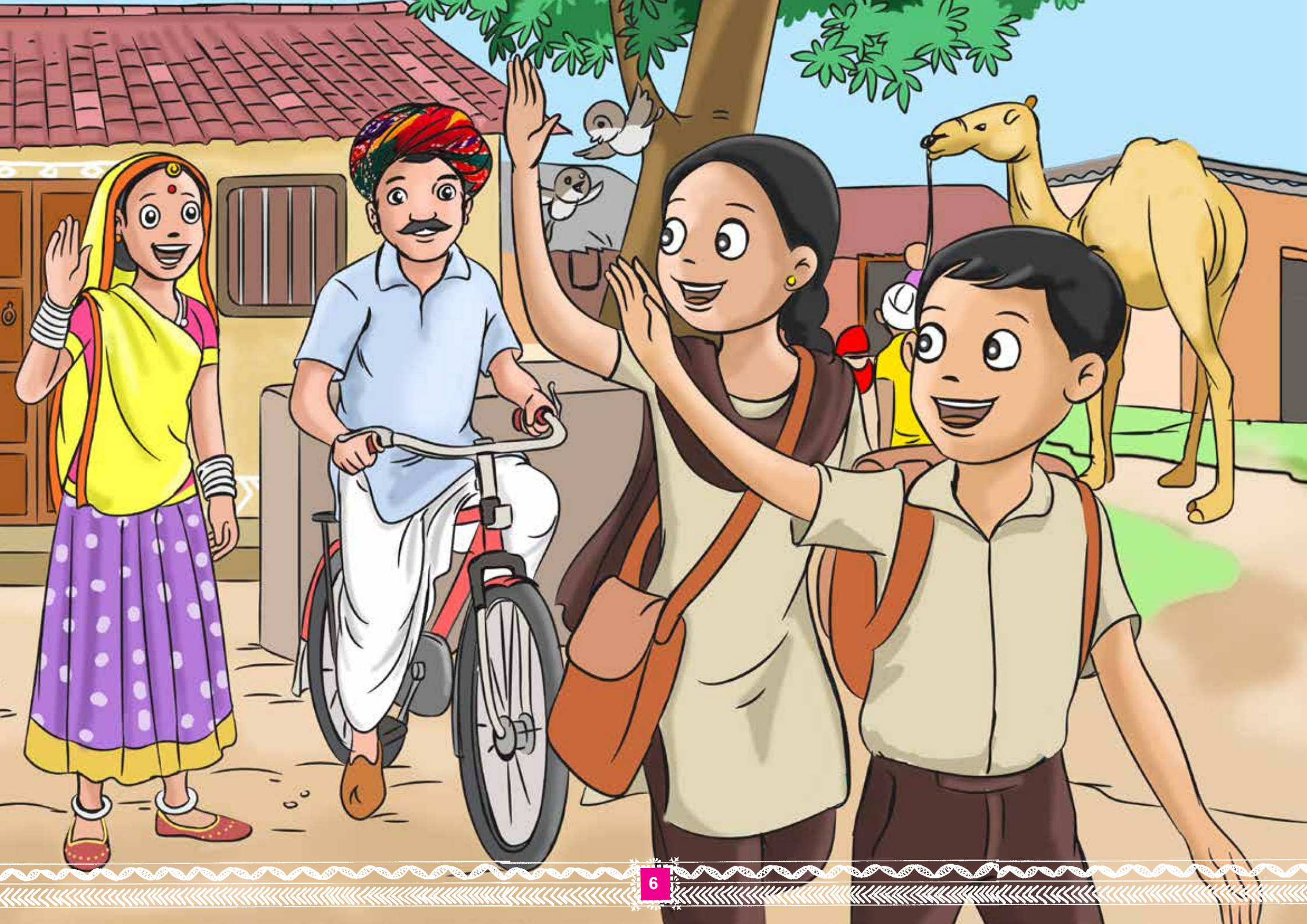

सुमित्रा घर पर अपने बड़े भाई गजेन्द्र से बात करती हुई...

सुमित्रा : आओ भैया, आओ । आज हमारे घर का रास्ता कैसे भूल गए?

गजेन्द्र : सुमित्रा, तुमसे एक जरूरी बात करनी थी, इसलिए मैंने सोचा कि सीधा तुम्हारे घर ही आकर बात करूं।

सुमित्रा : कौन–सी जरूरी बात करनी है भैया?

गजेन्द्र : सुमित्रा, मैंने अनीता के लिए एक अच्छा परिवार देखा है, जहां एक लड़का और एक छोटी लड़की भी है। जहां हम अनीता की शादी की बात चला सकते हैं। लड़के का कद–काठी और रंग–रुप सब हमारी अनीता के लिए सही है। उसके अलावा लोकेश के लिए भी उनकी छोटी लड़की ठीक होगी। एक ही परिवार में दोनों का रिश्ता हो जाये तो बहुत फायदे हैं।

सुमित्रा : अनीता के लिए शादी का रिश्ता! पर अभी तो अनीता पढ़ ही रही है और उसकी उम्र भी अभी शादी के लिए नहीं हुई है।

गजेन्द्र : पर सुमित्रा, तू ये भी तो सोच कि अनीता की पढ़ाई–लिखाई तो होती रहेगी, पर ऐसा रिश्ता बार–बार नहीं आएगा। मैं तो कहता हूं कि एक बार जमाई जी से बात कर लड़के को देख लेना चाहिए। मैंने भी तो अपनी बेटियों की शादी पिछले साल की थी। अब हमारे पास इतना पैसा भी तो नहीं है कि हम दहेज देकर उनकी शादी ज्यादा उम्र में करा सकें।

गजेन्द्र की बात सुनकर सुमित्रा सोच में पड़ जाती है...

चर्चा के बिन्दु

सुमित्रा और धनराज को अनीता के भविष्य के किन अहम पहलूओं की ओर ध्यान देना चाहिए?

मुख्य संदेश

लड़कियों और लड़कों दोनों की शादी में जल्द–बाजी न करके, बल्कि उनके विकास और शिक्षा पर ध्यान देना चाहिए।

सुमित्रा चिंतित होकर धनराज से बात करती हुई...

सुमित्रा : गजेन्द्र भैया आए थे, काफी देर तक आपका इंतजार करने के बाद जेठ जी से बात करके चले गए।

धनराज : अच्छा? तो क्या कह रहे थे गजेन्द्र भैया?

सुमित्रा : अनीता की शादी के लिए एक रिश्ता बता रहे थे। कहने लगे कि परिवार खानदानी है और वहां दोनों बच्चों की शादी की जा सकती है।

धनराज : भैया ठीक ही कह रहे थे। अनीता की शादी आज नहीं तो कल करनी ही है, ज्यादा समय बीतता गया तो किस–किस को जवाब देते रहेंगे। मुझे भी कभी–कभी यही लगता है कि अनीता को घर के काम–काज सिखाने के बाद शादी कर ही देनी चाहिए। ज्यादा उम्र होने के बाद तो हम ज्यादा दहेज भी नहीं दे पाएंगे।

सुमित्रा : दहेज वाली बात तो सही है, पर पता नहीं अभी से अनीता के बारे में ये फैसला लेना सही होगा या नहीं?

धनराज : मैं मानता हूं कि ये सब करना जल्द–बाजी होगी और ये भी जानता हूं कि ये फैसला लेना अनीता के लिए ठीक नहीं, परन्तु हम उतना ही पैर पसार सकते हैं, जितनी हमारी चादर है। मैं इस बारे में बलवंत भैया से भी पूछ लेता हूं।

सुमित्रा : हममम...।

चर्चा के बिन्दु

सुमित्रा और धनराज को किस प्रकार से फैसला लेना चाहिए?

मुख्य संदेश

अक्सर, जल्द–बाजी में लिए गए फैसले से गलत असर हो सकता है।

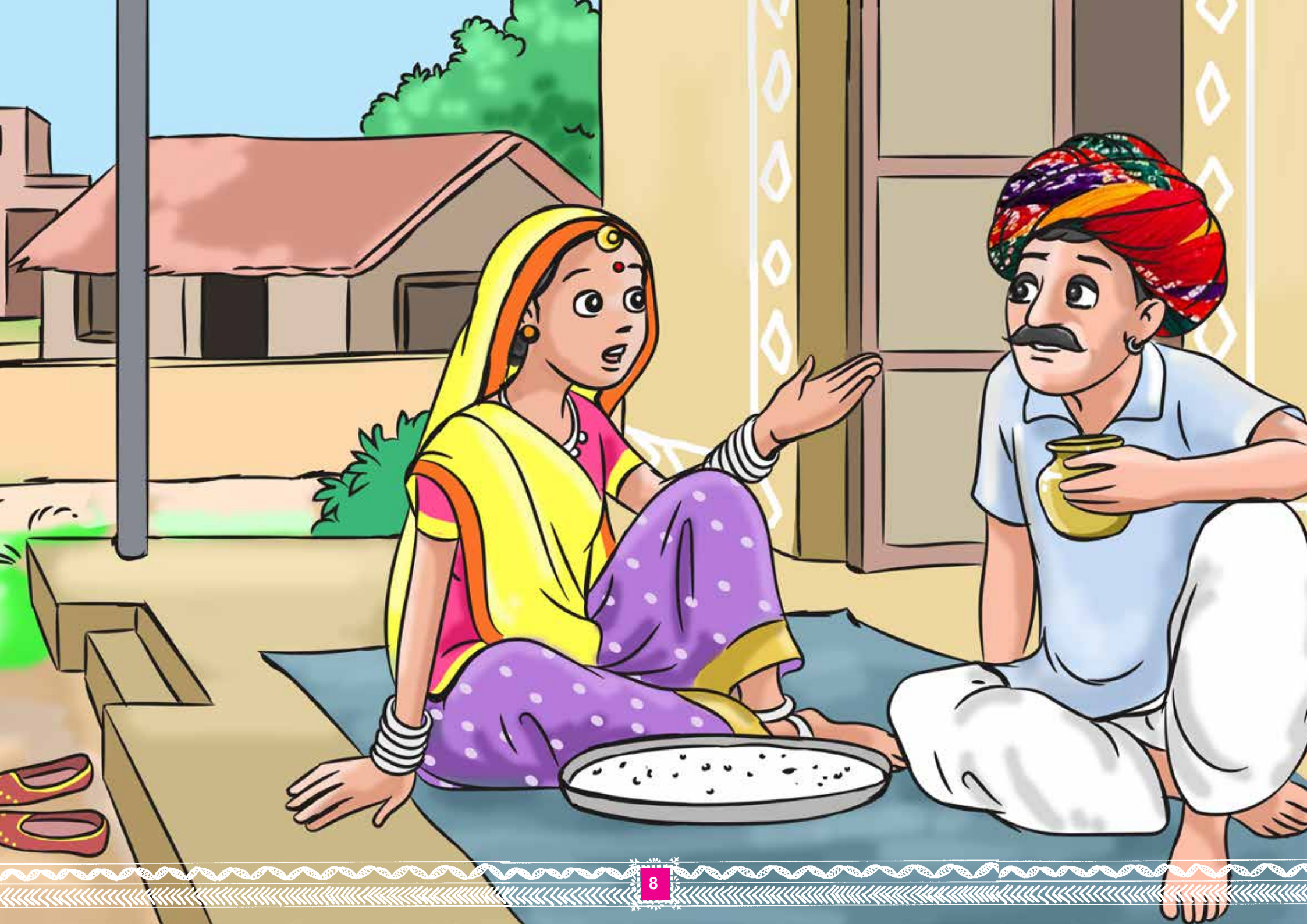

धनराज अपने बड़े भाई के घर पर अनीता के रिश्ते का जिक्र करता हुआ, साथ ही गांव के सरपंच जी भी वहां बैठे हुए...

धनराज : भैया, अनीता की शादी के बारे में जो गजेन्द्र भैया ने बात की, उसको लेकर मैं दुविधा में हूँ।

बलवंत : अरे दुविधा कैसी! धनराज, ये तो बड़ी अच्छी बात है। वैसे भी अनीता को कब तक घर में बैठा कर रखोगे! अब तो गांव वाले बोलने भी लगे हैं कि अनीता के हाथ जल्दी पीले कर देने चाहिए, बेटियां तो पराया धन होती हैं, जमाना बहुत खराब है, कहीं कोई ऊंच–नीच न हो जाए।

धनराज : पर भैया, आजकल जमाना बदल रहा है। अब तो बेटियों को बेटों के समान अवसर दिए जा रहे हैं और पढ़ाया भी जा रहा है।

बलवंत : पर धनराज, ऐसे रिश्ते बार–बार नहीं आते और अनीता को पढ़ाने–लिखाने में हमारा क्या फायदा। आखिर वह कमा कर तुम्हें थोड़ी न देगी और अगर उसके पढ़ाने के चक्कर में उम्र ज्यादा हो गई तो, उल्टा हमें दहेज ज्यादा ही देना पड़ेगा। अगर अनीता और लोकेश दोनों की शादी एक ही घर में हो गई, तो तुम दहेज के बोझ से भी बच जाओगे।

सरपंच जी : सही कह रहा है बलवंत, यह रिश्ता भी हमारी जाति व गोत्र का है, इसलिए यह शादी हमें आने वाले अक्खा तीज में ही कर देनी चाहिए। अक्खा तीज भी आने ही वाला है, तो शुभ काम में देरी कैसी!

धनराज : लेकिन, मैं तो अब भी समझ नहीं पा रहा हूं कि आखिरकार इतनी छोटी–सी उम्र में अनीता की शादी करना ठीक रहेगा या नहीं!

चर्चा के बिन्दु

बलवंत की दी गई सलाह के बारे में, आप क्या सोचते हैं?

मुख्य संदेश

परिवारवालों या समुदाय के दबाव में आकर, हमें ऐसा कोई कदम नहीं उठाना चाहिए, जो बच्चों के हित में न हो।

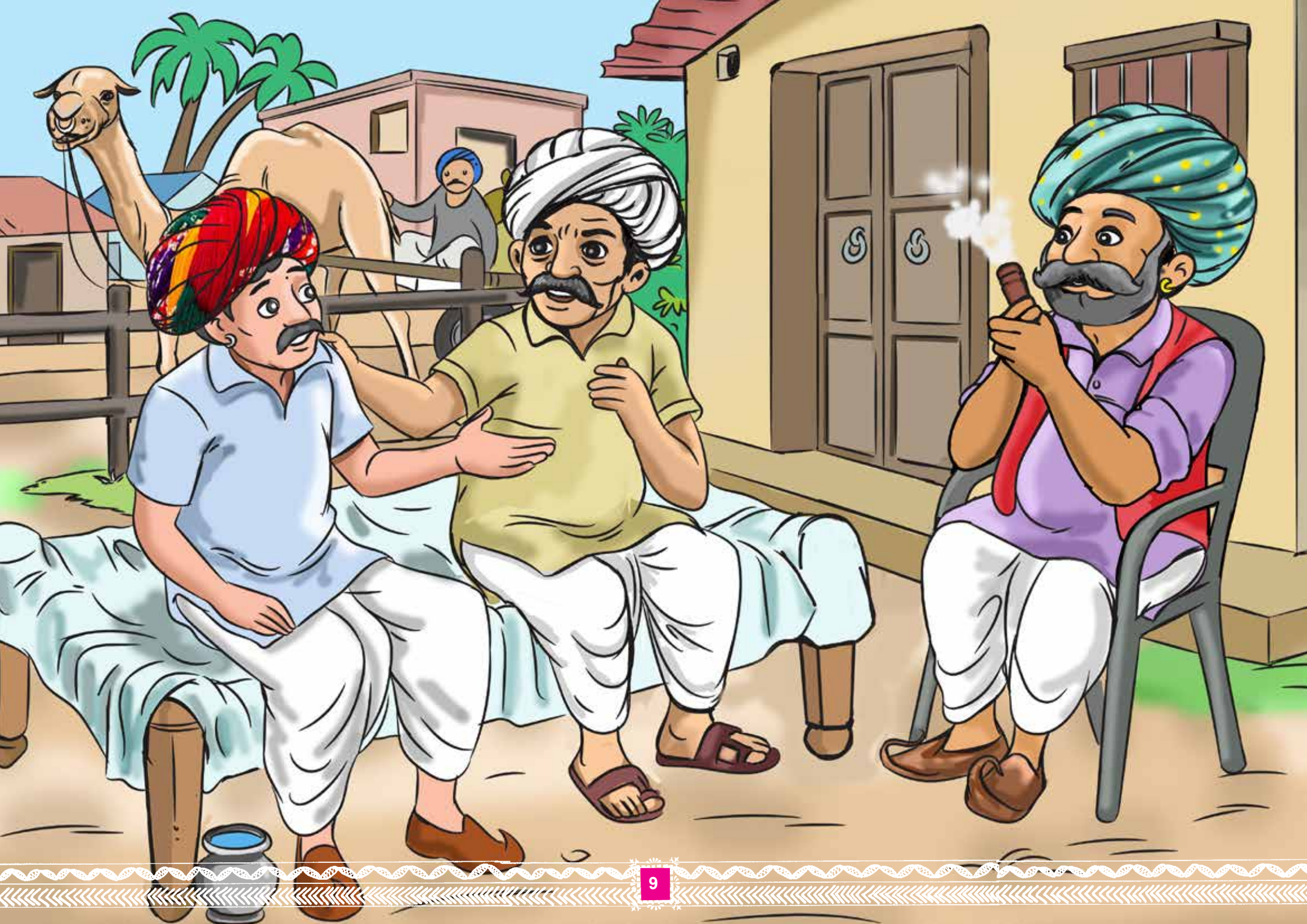

अनीता और लोकेश स्कूल से लौट कर घर में आते हुए...

लोकेश : बाबू जी, आज हमारे स्कूल में कई प्रसिद्ध खिलाड़ी आए थे, जो बच्चों को खेल के बारे में बता रहे थे। मुझे तो देखकर बहुत मजा आया।

अनीता : मैंने उनसे कई सारी जानकारियां भी लीं। बाबू जी अब मैंने फैसला कर लिया है कि मैं भी खेलकूद में अपना भविष्य बनाऊंगी। मैं अपने स्कूल की खेलकूद प्रतियोगिता में हमेशा आगे रहती हूं, इसलिए मैंने सोच लिया है कि मैं बड़ी होकर खेलकूद की टीचर बनूंगी।

धनराज : अनीता, ये क्या बोल रही हो, तुम्हारा इस उम्र में तो खेलना–कूदना ठीक है, पर बड़े होकर तुम खेलकूद करोगी तो हमारा समाज क्या कहेगा, तुमसे शादी कौन करना चाहेगा? कभी इसके बारे में भी सोचा है तुमने?

यह सुनकर अनीता का चेहरा उदास हो जाता है।

लोकेश : लेकिन बाबू जी, स्कूल में आए खिलाड़ियों में कुछ लड़कियां भी थीं। अब तो लड़कियां हर क्षेत्र में आगे बढ़ रही हैं, तो मेरी दीदी क्यों नहीं।

सुमित्रा : लोकेश ठीक ही तो कह रहा है जी, क्यों इतना गुस्सा कर रहे हो! अभी दोनों स्कूल से आए हैं, इन्हें खाने–पीने और आराम तो करने दो। चलिए, तब तक हम बाजार से हो आते हैं।

चर्चा के बिन्दु

लड़कियों के खेलकूद क्षेत्र में भविष्य बनाने के बारे में आप क्या सोचते हैं?

मुख्य संदेश

लड़का हो या लड़की, दोनों को ही हर तरह के समान अवसर मिलने चाहिए।

बाजार में धनराज और सुमित्रा की मुलाकात ए.एन.एम. बहन जी से होती है...

धनराज और सुमित्रा : बहन जी नमस्ते!

बहन जी : नमस्ते धनराज और सुमित्रा, कैसे हो तुम दोनों? अनीता और लोकेश कैसे हैं?

सुमित्रा : बहन जी, सब ठीक है। वे दोनों तो घर पर ही हैं, हमें कुछ सामान लेना था तो सोचा चलकर ले आते हैं।

बहन जी : मेरे पति यानि मास्टर जी, अनीता की प्रशंसा करते कभी नहीं थकते।

सुमित्रा : कैसी प्रशंसा बहन जी?

बहन जी : अभी कल ही की बात है, मेरी मास्टर जी के साथ अनीता को लेकर एक बात छिड़ गई। इस पर वे कहने लगे, अनीता पढ़ाई–लिखाई के साथ–साथ खेलकूद में भी बहुत आगे है। उसने खेल प्रतियोगिता में इनाम भी जीते हैं। ऐसा ही रहा तो, वह खेलकूद में जरुर आगे बढ़ेगी।

धनराज : वो तो ठीक है बहन जी, पर.....।

बहन जी : धनराज क्या हुआ, तुम्हें अपनी बेटी के विकास और उपलब्धि पर खुशी नहीं हो रही है?

धनराज : खुशी तो है बहन जी, पर अनीता के भविष्य को लेकर कुछ उलझनें हैं, जिनको लेकर हम बहुत परेशान हैं।

चर्चा के बिन्दु

क्या ए.एन.एम. बहन जी ने सुमित्रा और धनराज को सही सलाह दी?

मुख्य संदेश

लड़का हो या लड़की दोनों को ही उनकी रूचि के अनुसार भविष्य बनाने के लिए प्रोत्साहित करना चाहिए।

चर्चा के बिन्दु

- कम उम्र में बच्चों की शादी कराने से कौन से दुष्परिणाम हो सकते हैं?
- आपके घर में, काम को कैसे बांटा जाता है?

मुख्य संदेश

- माता–पिता दोनों को ही समाज के दबाव में आकर अपने बच्चों के भविष्य का निर्णय नहीं लेना चाहिए।
- महिला और पुरुष, दोनों को ही घर और बाहर के काम–काज को समान रूप से बांट कर करने चाहिए।
- कम उम्र में शादी करने से लड़की और लड़के दोनों के ही शारीरिक व मानसिक स्तर पर बुरा प्रभाव पड़ता है।

ए.एन.एम. बहन जी धनराज को शिक्षा के महत्व के बारे में समझाती हुईं...

धनराज : दरअसल बहन जी, मेरे और सुमित्रा के भैया अनीता की शादी को लेकर दबाव बना रहे हैं कि हमें अब अनीता की शादी जल्द से जल्द कर देनी चाहिए। लेकिन अनीता अभी और आगे पढ़कर एक खेलकूद की टीचर बनना चाहती है और हम दोनों भी उसको आगे पढ़ाना चाहते हैं, ताकि उसके सपने पूरे हो सकें। अब समझ नहीं पा रहे हैं कि एक तरफ भैया की मानूं या फिर बेटी का सपना पूरा करूं!

बहन जी : ये तो बहुत अच्छी बात है धनराज, कि तुम दोनों ही अनीता का भविष्य बनाना चाहते हो, इसलिए इस उम्र में शादी की बात को मान लेना ठीक नहीं होगा, क्योंकि कम उम्र में शादी कर देने से उनकी इच्छाएं व सपने पूरे नहीं हो पाते, जबकि पूरी शिक्षा और सही उम्र में शादी से लड़का व लड़की दोनों अपनी जिम्मेदारी व भूमिका और भी बेहतर तरीके से निभा पाते हैं। साथ ही अपने सपनों को भी पूरा कर पाते हैं। हमारी अनीता का खेलकूद टीचर बनने में क्या गलत लगता है। अगर लड़के सब कुछ कर सकते हैं तो लड़कियां क्यों नहीं कर सकतीं? लड़का और लड़की दोनों को ही हमेशा समान भाव से देखना चाहिए। रही बात बच्चों की शिक्षा की तो वह उनके जीवन में बहुत जरुरी है। शिक्षा पाना हर बच्चे का अधिकार होता है और शिक्षा दिलाना हर माता–पिता की जिम्मेदारी।

जब बच्चे पढ़ेंगे, तभी तो अपने सपने सजा पाएंगे, इस दुनिया में अपना मुकाम बना पाएंगे और अगर उनकी शादी जल्दी कर दी गई तो इससे बच्चे के शरीरिक व मानसिक स्तर दोनों पर बुरा प्रभाव पड़ सकता है। अब तुम्हीं बताओ अनीता को पढ़ा कर उसके सपने सजाना चाहोगे या कम उम्र में शादी कर उसका बचपन खत्म करना चाहोगे।

तुम्हें तो पता ही होगा कि हमारे गांव के सुरजन को मैंने समझाया था कि बेटी की शादी जल्दी कर देना उसके स्वास्थ्य के लिए ठीक नहीं, क्योंकि कम उम्र में सही पोषण की जरुरत होती है, लेकिन फिर भी उसने अपनी बेटी की शादी कम उम्र में ही करा दी। जिससे वह कम उम्र में गर्भवती हो गई। उस छोटी उम्र में गर्भावस्था की वजह से वह और भी कमजोर हो गई और प्रसव के दौरान बड़ी मुश्किल से बची।

धनराज : परन्तु बहन जी, यदि अभी हमने इतने अच्छे रिश्ते को नहीं अपनाया तो, पता नहीं बाद में ऐसा रिश्ता फिर कभी आएगा या नहीं।

बहन जी : धनराज, अब समय बदल रहा है और समय के साथ लोगों की सोच भी बदल रही है। तुम्हें याद है कुछ समय पहले मेरे बारे में भी गांव के लोग बातें बनाते थे, परन्तु आज तुम देखते ही हो कि गांव में मेरी कितनी इज्जत है।

धनराज सोच में पड़ जाता है।

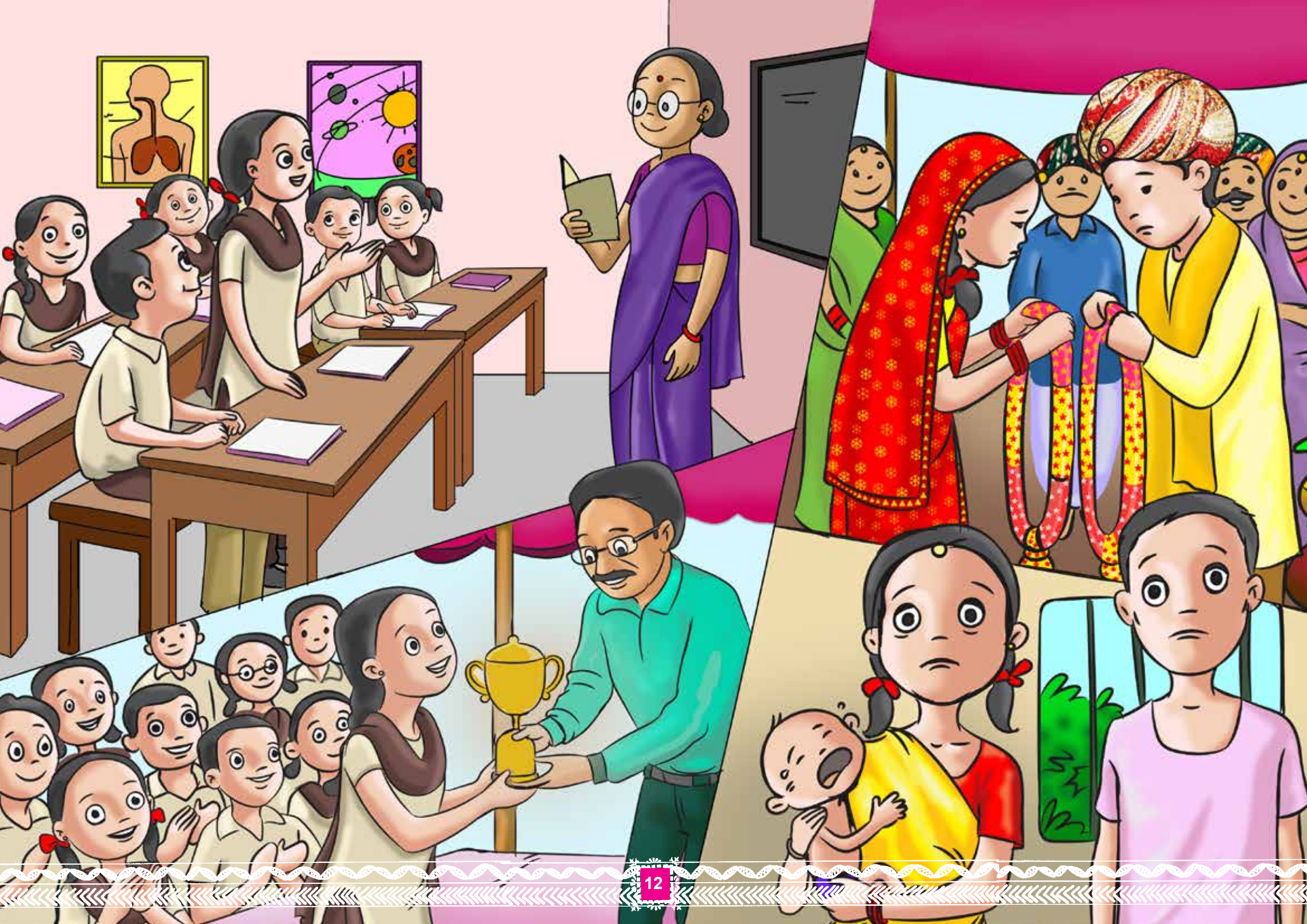

धनराज : मुझे याद है कि उन दिनों गांव के लोग बोलते रहते थे कि दिन भर इधर–उधर पूरे गांव में ए.एन.एम. बहन जी घुमती रहती है और मास्टर जी स्कूल से आकर घर के काम–काज में लगे रहते हैं।

सुमित्रा : हां और हमारे पड़ोस की राधा चाची भी बोलती रहती थी कि मास्टर जी तो घर में मेहमानों के आने पर खाना बनाने में भी उनका हाथ बंटाते हैं।

धनराज : लेकिन कुछ समय बाद ही गांव के लोग कहने लगे थे कि ए.एन.एम. बहन जी हमारे गांव के लिए कितना कुछ करती हैं जैसे कि घर–घर जाकर लोगों को जागरुक करना, उन्हें स्वास्थ्य से जुड़ी सही सलाह देना। गर्मी हो या सर्दी, हर मौसम में वह हमारे परिवारों से जुड़ी रहती हैं।

बहन जी : हां, तो धनराज देखा था न कि लोग ऐसे ही व्यंग्य करते हैं, परन्तु जब उन्हें उनके महत्व के बारे में पता चलता है तो वही लोग अपने आप समझने लग जाते हैं।

सुमित्रा : बहन जी, आपने तो हमारी चिंता का बोझ ही उतार दिया। आपने एकदम सही कहा। हमें अपने बच्चों के बारे में सोचना चाहिए, न कि समाज के दबाव में आकर गलत फैसले ले लेने चाहिए।

धनराज : सुमित्रा सही कह रही है बहन जी, अब हम अपनी अनीता बेटी के जीवन में कुछ भी ऐसे कदम नहीं उठाएंगे, जिससे कि उसकी शिक्षा में कोई बाधा आए। सलाह देने के लिए धन्यवाद बहन जी, आपने हमारी आंखें खोल दीं। अब हम चलते हैं।

चर्चा के बिन्दु

बच्चों के भविष्य के बारे में सोचते समय, किन बातों का ध्यान रखना चाहिए?

मुख्य संदेश

बच्चों को पढ़ाई–लिखाई से लेकर, उनके सपनों को साकार करने तक पूरा सहयोग और मदद मिलनी चाहिए।

महिला एवं बाल विकास विभाग

साझा अभियान
बाल विवाह मुक्त राजस्थान

हौसला दें, सम्मान दें,
बच्चों को खुद की पहचान दें!